Special children → J.E. Wallance Wallin

यह संकेत देते हैं कि 1000 प्रारम्भिक स्कूल (Elementary Schools) के बालकों के समूह जो निम्न साधारण और उच्च आर्थिक और सामाजिक वातावरण (Inferior, Medium, Superior, Economic, and Social Status) से आए हो, 120 बालकों को विशेष शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक या शारीरिक समायोजन की आवश्यकता होगी, क्योंकि उनकी ज्ञानोपार्जन सम्बन्धित मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, व्यक्तिगत या शारीरिक समस्याएं विशिष्ट प्रकार की होंगी जिस कारण यह कुछ विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करेंगे। इस बालकों का 110 हिस्सा मानसिक या शारीरिक अयोग्यता से पीड़ित होता है। जो बहुत सारी गम्भीरता के लिए हुए होती है। तथा इनके लिए विभिन्न प्रकार की कक्षाओं का आयोजन करना जरूरी हो जाता है। ये बालक साधारण बालकों की अपेक्षा हीन भावना से ग्रसित होते हैं। साधारण बालकों की तुलना में उनके शारीरिक, मानसिक, और संवेगात्मक तत्वों में अन्तर होता है। यह असाधारण या विशिष्ट शब्द उनके लिए प्रयोग किया जा सकता है, तथा ऐसे बालकों को भी असाधारण कहा जा सकता है जो उच्च बुद्धि के होते हैं।

क्रो & क्रो के अनुसार - "अनोखा या असाधारण शब्द ऐसे के लिए प्रयोग किया जाता है - जो साधारण व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित गुणों का इस सीमा तक विभिन्नता लिए होता है जिसके कारण

व्यक्ति विशेष को तथा उसके साथियों को ध्यान देना पड़ता है या दिया जाता है उसके कारण ही उसकी व्यवहारिक प्रतिक्रियाएँ तथा कार्य प्रभावित हो जाते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर जो असाधारण या विशिष्ट बालकों के लिए की गई है - इस प्रकार के व्यक्तियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं -

① शारीरिक न्यूनता से ग्रसित अथवा विकलांग बालक - (Physically handicapped) - इस तरह के बालकों को हम इस तरह से बाँट सकते हैं - अपंग (The cripple), सम्पूर्ण और अर्द्ध अन्धे - (The blind and near blind), पूर्ण बधिर और अपूर्ण बधिर (The deaf and hard of hearing), हकलाने एवं दोषयुक्त वाणी वाले (The defective in speech), निर्बल एवं कोमल (The delicate child)

② मानसिक न्यूनता से ग्रसित बालक (Mentally retarded)

③ प्रतिभावान (gifted)

Identification of children with Dyslexia → (भाषायी विकार) डिसलेक्सिया शब्द ग्रीक भाषा से निकाला गया है Dys से तात्पर्य है निर्बल या अपर्याप्त और Lexis का अर्थ है शब्द। विद्यार्थी जिन्हें डिसलेक्सिया वह पठन (Reading), Spelling, भाषा को समझने में जो वह

सुनते हैं ~~जो वह सुनते~~ हैं या बोलने तथा लिखने में कठिनाई अनुभव करते हैं। वह बच्चे Dyslexia के शिकार होते हैं।

डिसलेक्सिक की पहचान हम उनका (child) का वाचन, लेखन, तथा गणित पर उनका ध्यान, तथा गणित को बनाना इन सब के द्वारा हम इनसे ग्रसित बच्चे की पहचान कर सकते हैं। फिर भी इनकी पहचान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि शिक्षक सुधारात्मक विधियों को उनके साथ प्रयोग कर सके।

डिसलेक्सिक बालक की पहचान के लिए एक विधि है जो उसके बोलने की प्रक्रिया का निरीक्षण करती है। एक डिसलेक्सिक ऐसी गलतियाँ कर सकता है जैसे Tram लिखता है Train के स्थान पर, shot लिखता है Short के स्थान पर, crit लिखता है correct के स्थान पर sreel लिखता है circle के स्थान पर।

डिसलेक्सिक बालक की पहचान उनके गणित में निष्पादन का निदान करके भी किया जा सकता है। उनके सीखने में कठिनाई हो सकती है। इसका कारण यह है कि गणित भी एक भाषा है इसके नम्बरों को याद करने में अक्षरों की तरह बहुत ध्यान देना होता है।

डिसलेक्सिक की पहचान हमेशा सरल नहीं होती है। इसमें उस विद्यार्थी को पहले कुछ समय तक निरीक्षण करना चाहिए जिससे कि वो बच्चा डिसलेक्सिक है या नहीं अगर बार-बार इस

Scanned with CamScanner

(4)

इस तरह की गलती करता है। उसका निरीक्षण करना चाहिए।

Remedial Measures (उपचारात्मक उपाय)

यह समझना बहोत जरूरी है कि डिसलेक्सिया एक रोग नहीं है। यह एक विशिष्ट प्रकार का मस्तिष्क है। अनेक मशहूर लोग डिसलेक्सिया से ग्रसित हुए हैं। जैसे — [illegible], Leonardo D. Vinci, Hans Christian Anderson, Woodrow Wilson आदि।

आज भी अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति जो चिकित्सा, मनोविज्ञान, शिक्षा, बैंकिंग तथा इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हैं जो डिसलेक्सिक हैं। अनेक ऐसे साधारण व्यक्ति भी हैं जो इस बीमारी से ग्रसित होते हुए भी आज ऊँचे पायदान पर हैं।

ऐसे बालक जिनमें सीखने सम्बन्धी अयोग्यताएँ या डिसलेक्सिया होता है।

Behavioural Pattern (व्यावहारिक प्रतिमान) —

1. अत्यधिक क्रियाशीलता या बेचैनी।
2. सामंजस्य एवं संतुलन की कमी।
3. अव्यवस्थित एवं विचलित।
4. निर्धारित कार्य को पूरा करने में असफलता।
5. अनियमित कार्य – एक क्षेत्र में योग्यता लेकिन अन्य क्षेत्रों में बहुत अधिक कमजोर।

(6) Academic Performance (शैक्षिक निष्पादन) —

(1) पठन → (1) पठन प्रवाह में कमी।
(2) शब्दों में उलट-फेर (saw के स्थान पर was)
(3) शब्दों को छोड़ देना।

(2) लेखन — (1) टेढ़े-मेढ़े अक्षर
(2) सीधी रेखा में लिखना कठिन।
(3) धीमा या सुस्त।

(3) गणित → (1) गणित के मूल बातों का भूल जाना।
(2) संख्याओं की गणना में कठिनाई।

अन्त में यही कहेंगे कि डिसलेक्सिक मन्द, सुस्त या मूढ़ नहीं होते हैं। उन्हें डाँटना नहीं चाहिए नहीं उन्हें परम्परागत ढंग से सीखने या मेहनत करने के लिए बाध्य करना चाहिए। इसतरह से करना उनमें विफलता, चिन्ता तथा नाराजगी उत्पन्न कर सकती है। उन्हें विशिष्ट उपयुक्त सहायता दी जानी चाहिए।

Merion Welchman and Julia Welchman ने अनेक सुझाव दिया है। डिसलेक्सिक बालक के कक्षा कक्ष में सहायता करना चाहिए। उनका मुख्य सुझाव है विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने में सहयोग देना। विद्यार्थी को प्रतिदिन के पाठ को याद करने के लिए बाध्य नहीं करना, पाठ की पाठ्य-सामग्री के सम्बन्ध में कठोरता नहीं बरतना, विद्यार्थी को समय तथा प्रतियोगिता के दबाव में नहीं रखना, विद्यार्थी के एक लाईन छोड़कर लिखने के लिए

प्रोत्साहित करना। बच्चे के साथ सहानुभूति रखना दबाव में न आने देना।

— o —

Attention Deficit Disorder — (अवधान कमी सम्बन्धित विकार)

अनेक बालक अवधान कमी सम्बन्धित विकार प्रदर्शित करते हैं। इस विकार की परिभाषा दी जाती है "एक सीखने की समस्या जिसकी विशेषता का मुख्य विद्यार्थियों की जो कार्य वह कर रहे हैं उस पर ध्यान न केन्द्रित करने की अयोग्यता से किया जाता है"।

अवधान कमी सम्बन्धित विकार की विशेषताएँ

1. काम के पूरा करने में असफलता।
2. सुनने में असफलता।
3. ध्यान भंग होना।
4. एकाग्रता में कमी।
5. संवेगानुवर्ती (Impulsiveness), बिना विचारे काम करने लगना, कार्य को पूरा करने में कोई स्थायित्व नहीं।
6. कुछ बच्चे अपने हाथों या पैरों को बेचैनी से हिलाते, डुलाते रहते हैं।
7. अपने बैठने के स्थानों पर कुलबुलाहट दिखाते हैं।
8. बहुत बातचीत करते हैं।
9. उच्च स्तर की ऊर्जा तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ दिखाते हैं।

अनुसंधान द्वारा यह पाया गया है कि इसके लक्षण दो से तीन वर्ष की आयु में पाये जाते हैं लगभग यह बालकों में बालिकाओं की तुलना में बहुधा अधिक होता है।

इसके उपचार के तरीके हैं जिससे लाभ हो सकता है बच्चे को :— औषधिकरण - (Medication), पुष्टिकरण कार्यक्रम (Reinforcement), संरचित शैक्षिक कार्यक्रम - (Structured teaching Programmes.)

हमारे देश में अपवादात्मक बालकों को अलग विद्यालयों में भेजने की प्रथा थी, और आज भी इस तरह की प्रथा है। ऐसे विद्यालयों में शिक्षा का स्तर निम्न होता है। विद्यार्थियों की कम उपलब्धि होती है। बालक अपने सामान्य सहपाठियों से दूर हो जाता है तथा बाद उस कौशल से वंचित रह जाता है जो उनके वास्तविक संसार से सामना करने योग्य बनाता है। अपवादात्मक बालकों के अलग विद्यालयों को समाज भी हीन दृष्टि से देखता है। इस कारण माँ-बाप अपने बच्चे को उस विद्यालय में नहीं भेजना चाहते हैं। यही कारण है कि अब शिक्षाविदों ने ऐसे बालकों की सहायता के लिए नए-नए तरीकों को अपना रहे हैं—

Mainstreaming (प्रमुख प्रवाह) - इस पर विचार विशेषज्ञों ने किया था। इसका मतलब है Special children को अलग परिवेश से नियमित कक्षाओं में प्रवेश दिया जाय। इसका मुख्य लाभ यह है कि अपवादात्मक बालक सामान्य (Normal children) बालकों के साथ अन्तःक्रिया कर सकते हैं। अपवादात्मक बालक (Special child) को आवश्यक सहायता एवं सेवाएँ देने के लिए

न्यूनतम निर्धारक वातावरण (Least Restrictive Environment), की धारणा को विकसित किया गया। इस वातावरण में विद्यार्थी जितना भी सम्भव हो उतने सामान्य शैक्षिक परिवेश में रखे जाते हैं, तथा, की साथ-साथ उनकी विशिष्ट शैक्षिक, सामाजिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान दिया जाता है।

एक और धारणा बनाई गई जिसे अनुकूली उपयुक्त (Adaptive fit) कहा गया है। इसका मतलब है — वह सीमा जिस तक एक विद्यार्थी विद्यालय के ~~मांगों के~~ परिवेश की मांगों की पूर्ति कर सकता एवं वह सीमा जिस तक कि विद्यालय विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं का निर्वाह सकता है।

प्रमुख प्रवाह, अनुकूली उपयुक्त तथा न्यूनतम निर्बाधक वातावरण (L.R.E.) की धारणाओं ने धीरे-धीरे एक अन्य धारणा का विकास किया है। जिसे अन्तर्विष्ट (Inclusion) की धारणा कहते हैं। इसके द्वारा पिछड़े हुए बालकों समस्या बालकों, अपचारी बालकों और सामाजिक रूप से वंचित बालकों की शिक्षा —

1. उन विद्यार्थियों को जिनकी विशिष्ट आवश्यकताएं हैं। एक नियत विद्यालय में प्रवेश कराया जाये
2. उपयुक्त सहायक सेवाएं उनके लिए उपलब्ध की जाये ताकि अनुकूली उपयुक्त के प्राप्त होने का विश्वास हो जाये।
3. सामान्य एवं विशिष्ट शिक्षा सेवाओं में समन्वय प्राप्त किया जा सके।

अन्तर्विष्ट (Inclusion) पर ध्यान मुख्य रूप से विशिष्ट बालकों की शिक्षा

यथासम्भव नियत कक्षाओं में हो सके लेकिन इसके साथ ऐसा भी प्रावधान हो कि उन्हें अन्य स्थानों पर भी सहायक सेवाएँ मिल सकें।

Scanned with CamScanner